सवाल (1)देव बन्दी पेशवाओं के वह कौन से अक़ीदे हैं।जिन्हें जान लेने के बाद उन को मुसलमान समझने वाला और देव बन्दी फिरक़ा को हक़ मानने वाला काफिर हो कर इस्लाम से खारिज हो जाता है ?

जवाबः(1)देव बन्दियों के पेशवाओं मोलवी थानवी का अ़क़ीदा यह है।कि जैसा इल्म हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को हासिल है,ऐसा इल्म तो बच्चों, पागलों और जानवरों को भी है। जैसे कि उन्होंने ने हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए कुल इल्मे ग़ैब का इन्कार करते हुए सिर्फ बअ़ज़ इल्मे ग़ैब को साबित किया फिर बअ़ज़ इल्मे ग़ैब के बारे में यूं लिखा है किः

'' इस में हुज़ूर की किया तख़सीस है ऐसा इल्म तो ज़ैद व उमरु बल्कि हर सिब्बी व मजनूं बल्कि जमीअ़ हैवानात व बहायम के लिए भी हासिल है।(हिफ्ज़ुल ईमान) नोटः नए एडीशन में यह इबारत कुछ बदल दी गई है लेकिन सारे देवबन्दी इस पुरानी इबारत को सही मानते हैं}

और देवबन्दियों के पेशवा मोलवी क़ासिम नानोतवी जिन को दारुलउलूम देवबन्द का बानी कहा जाता है,उन का अ़क़ीदा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम आखिरुल अम्बिया नहीं हैं आप के बाद दूसरा नबी हो सकता है। जैसा कि उन्हों ने लिखा है किः '' अ़वाम के ख़्याल में तो रसूलुल्लाह का खातिम होना बाईं मअ़ना है कि आप का ज़माना अम्बियाए साबिक़ के ज़माने के बाद और सब में आखिरी नबी हैं मगर अहले फहम पर रोशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्खुर ज़मानी में बिज़्ज़ात कुछ फज़ीलत नहीं (तख़दीरुन्नास सफा 3)

इस इबारत का खुलासा यह है कि खातमन्निबिय्यीन का यह मतलब समझना कि आप सब में आखिरी नबी हैं यह ना समझ और गंवारों का ख़्याल है और आगे फिर यूं लिखा कि : '' अगर बिलफर्ज़ बअ़द ज़मानए नबवी सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम

कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खामिमिय्यते मुहम्मदी मे कुछ फर्क़ न आएगा'' (तख़दीरुन्नास सफा 28)

इस इबारत का खुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी पैदा हो सकता है। अल्अ़याज़ुबिल्लाहि तआ़ला

और देवबन्दियों के पेशवा मोलवी रशीद अहमद गगोही व मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी का अ़क़ीदा यह है कि शैतान व म लकलमौत के इल्म से हुजूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इल्म कम है। जो शख़्स शैतान व मलकलमौत के लिए वसीअ़ इल्म माने वह मोमिन मुसलमान है लेकिन हुजूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इल्म को चसीअ़ और ज़ायद मानने वाला मुशिरक़ व बे ईमान है जैसा कि उन्हों ने लिखा है कि

'' शैतान व मलकलमौत को यह वुसअ़त नस से साबित हुई फखरे आ़लम के वुस्अ़त इल्म की कौन सी नस्से क़त़ई है जिस से तमाम नसूस को रद कर के एक शिर्क साबित करता है। (बराहीने क़ातिआ़ सफा 51)

मज़कूरा बाला कुफरी अ़क़ीदों के इलावह देवबन्दी पेशवाओं के और भी बहुत से कुफरी अ़क़ीदे हैं।इसी लिए मक्का मुअ़ज्जमा,मदीना तय्यबा,हिन्दुस्तान,पाकिस्तान,बंगला,और बरमा वग़ैरा के सैकड़ों उलमाए किराम और मुफ्तियाने इज़ाम ने इन देवबन्दियों के काफिर व मुर्तद होने का फतवा दिया है और फरमाया है कि ''मन शक्का फी कुफरिही व अ़ज़ाबिही फक़द कफर'' यअ़नी जो उन के काफिर होने में शक करे वह भी काफिर है।

लिहाज़ा देवबन्दियों पेशवाओं के इन कुफरी अ़क़ीदों को जान लेने के बाद उन को मुसलमान समझने वाला और देवबन्दी फिरक़ा को हक़ मानने वाला काफिर हो कर इस्लाम से खारिज हो जाता है। तफ्सील के लिए मुलाहेज़ा हो ''फतावा हिसामुल हरमैन'' और''अस्सवारिमुल हिन्दिया''

''कबराए वहाबिया ने खुले खुले ज़रुरियाते दीन का इन्कार किया और तमाम वहाबिया उस में उन के मवाफिक़ या कम अज़ कम उन के ह़ामी या उन्हें मुसलमान जानने वाले हैं और यह सब सरीह कुफ्र हैं तो अब वहाबिया में कोई ऐसा न रहा जिस की बिदअ़त कुफ्र से गिरी हुई हो ख़्वाह वह गै़र मुक़ल्लिद हो या बज़ाहिर मुक़ल्लिद'' (फतावा रज़्विय्या शरीफ़ सफा 28)

सवाल (2)वहाबी कहते हैं कि हदीस शरीफ में है कि अ़रब में काफिर नहीं होंगे और वहां वहाबियों की हुकूमत है तो मअ़लूम हुआ कि वह मुसलमान हैं लिहाज़ा अगर वहाबी काफिर हैं तो उन की इस बात का किया जवाब है?

जवाब (2) हदीस शरीफ में हरगिज़ नहीं है कि अ़रब काफिर नहीं होंगे बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने यह फरमाया '' इन्नश्शैता न क़द ऐ स मिन इन यअ़बुदुहुल मुसल्लू न फी जज़ीरतिल अ़रब'' यअ़नी शैतान इस अम्र से मायूस होगया है कि मुसल्ली (मोमिन) जज़ीरए अ़रब में उस की इबादत करें (यअ़नी बुत परस्ती में मुब्तला रहें) तर्जमा मिशकात मुतरजिम वहाबी मतबूआ़ किराची जिल्द अव्वल सफा 23) वहाबी के इस तरजमा से वाज़ेह हो गया कि शैतान की इबादत का मतलब है बुत परस्ती में मुब्तला रहना,यअ़नी जज़ीरए अ़रब के मुसलमान बुत परस्ती में मुब्तला रहें ऐसा न होगा।

और ह़ज़रत शैख़ शैख अब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिदवान तह़रीर फरमाते हैं:

और शैतान की इबादत से बुतों की पूजा मुराद है और अगरचे कि मुस्लिमा के साथी और मानिईन ज़कात मुर्तद हुए लेकिन उन लोगों ने बुतों की पूजा नहीं की।(अशअ़तुल्लम्आ़त जिल्द अव्वल सफा 83)

वाज़ेह हो गया कि हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इरशाद का मतलब यह है कि ऐ अ़रब के मुसलमान अपने दी से फिर कर बुत परस्ती नहीं करेंगे। लिहाज़ा अ़रब के लोगों का किसी वक़्त मुर्तद हो जाना या उस पर किसी ज़माना में मुर्तदों की हुकूमत क़ाइम हो जाना। हदीस शरीफ के खिलाफ नहीं जैसा कि हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़ाहेरी ज़माना के फौरन बाद मुस्लिमा कज़्ज़ाब,उस के मुत्तबेईन (इत्तेबाअ़ करने वाले) और ज़कात की फरज़ियत का इन्कार करने वाले अ़रब ही में मुर्तद हुए ।

और मुर्तद अबू ताहिर क़रम्ती का 320 हिजरी में मक्का मुअ़ज़्ज़ेमा पर ग़ल्बा हुआ और वह ऐसा मुर्तद था कि मस्जिदे हराम के मिम्बर पर खड़ा होआ और कहा '' इन्ना बिल्लाहि व बिल्लाहि अना अख़लुक़ल ख़ल्क़ व अफनीहिम अना'' यअ़नी मैं खुदा की क़सम– खुदा की क़सम मैं मखलूक़ को पैदा भी करता हूं और उन को फना भी करता हूं। (हुज्जल्लाहि अ़लल आ़लमीन जिल्द दोम सफा 829) और 654 हिजरी में मदीना शरीफ और मस्जिदे नबवी पर राफिज़ियों (यअ़नी शिय्यों) का क़ब्ज़ा था। क़ाजिए शहर और मस्जिदे नबवी के इमाम व खतीब सब राफेज़ी थे। (वफाउल वफा जिल्द अव्वल सफा 429)

साबित हुआ कि पहले ज़माने में भी अ़रब में मुर्तद हुए हैं और वहां उन की हुकूमत भी क़ाइम रही,लिहाज़ा अ़रब में वहाबियों की हुकूमत होने से उन का मुसलमान होना साबित नहीं।

सवाल (3) इस वक़्त हिन्दुस्तान में कौन कौन से गुमराह फिरक़े मौजूद हैं उन के अ़क़ीदे मुखतसर तह़रीर फरमाएं ?

जवाब (3) हिन्दुस्तान में बहुत से गुमराह फिरक़े हैं,जिन में से चन्द यह हैं।

क़ादयानी : यह फिरक़ा मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी का पैरु है। जिस ने अपने नबी होने का दअ़वा किया और अपनी किताब

इज़ाला औहाम के सफे 688 में लिखा है कि '' हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के इल्हाम व वह़ी ग़लत निकली थीं '' और इसी किताब के सफा 26,28,पर लिखा है कि: '' कुरआन शरीफ में गन्दी गालियां भरी हैं'' और अपनी किताब बराहीने अह़मदिया की निस्बत इसी किताब ''इज़ालए औहाम '' के सफा 533 पर लिखा है कि बराहीने अहमदिया खुदा का कलाम है उन के इलावह और भी कुफरी अ़क़ीदे हैं।। जिन की तफसील फतावा रज़्विय्या और बहारे शरीअ़त वग़ैरह में है।

राफज़ी : यह फिरक़ा अपने आप को शिय्या कहता है उस का एक अ़क़ीदा यह है कि कुरआन मजीद महफूज़ नहीं बल्कि उस में से कुछ पारे या सूरतें या आयतें या अल्फाज़ सहाबा ने निकाल दिए।और एक अ़क़ीदा यह है कि अइम्मए अत़हार रदियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से अफज़ल हैं और यह बिल इज्माअ़ कुफ्र है । और अफज़लुल बशर बअ़दल अम्बिया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़,हज़रत उमर फारुक़ अअ़ज़म,हज़रत उस्मान ग़नी और बहुत से सहाबए किराम रदियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम अजमईन को यह बिरोह मआ़ज़ल्लाह काफिर व मुनाफिक़ क़रार देता है। उन्हें बरा भला कहता है। और खुल्लम खुल्ला गालियां देता है उन के अ़क़ाएद की तफसील के लिए हज़रत शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिदवान की लिखी हुई किताब'' तोहफए असनाए अ़शरियअ़ '' देखना चाहिए।

वहाबी देवबन्दी :उन के कुफरी अ़क़ीदे जवाब नम्बर (1) बयान किए गए ।

वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद :यह फिरक़ा अपने आप को अहले हदीस कहता है। उस का अ़क़ीदा है कि अम्बिया और औलिया अल्लाह तआ़ाला की शान के सामने चमार से भी ज़्यादा ज़लील हैं

यअ़नी चमार की भी कुछ न कुछ थोड़ी बहुत इज़्ज़त अल्लाह कीश शान के आगे है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और दूसरे अम्बिया औलिया की शान के आगे इतनी भी इज़्ज़त व वक़्अ़त नहीं जितनी कि एक चमार की इज़्ज़त व वक़्अ़त है जैसा कि इस फिरक़े के पेशवा मोलवी इस्माईल देहलवी अपनी किताब '' तक़विय्यतुल ईमान'' में लिखते हैं : '' हर मखलूक़ बड़ा हो या छोटा वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है।''

(तक़विय्यतुल ईमान,मतबूआ़ क़य्यूमी कानपूर,सफा 10) इसी तरह़ बहुत से कुफरी अ़क़ीदे हैं तफ्सील के लिए मुलाहिज़ा हो किताब '' अतयबुल बयान रद्द तक़विय्यतुलईमान''

इस नाम निहाद अहलेहदीस का एक अ़क़ीदा यह भी है कि हज़रत ग़ौसे अअ़ज़म शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी,हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, हज़रत फरीदुद्दीन गन्ज शकर,हज़रत मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया,हज़रत मख़दूम अशरफ जहांगीर सिम्नानी,और हज़रत मख़दूम माहेमी,वग़ैरह सारे बुज़ुरुगाने दीन गुमराह व इद मज़हब थे। इस लिए कि यह सब के सब मुक़ल्लिद थे और किसी इमाम की तक़लीद इस फिरक़े के नज़्दीक गुमराही व बद मज़हबी है।

तब्लीग़ी जमाअ़तः इस गिरोह के भी सारे अ़क़ीदे वही है जो वहाबियों देवबन्दियों के हैं जैसा कि तब्लीग़ी जमाअ़त के बानी मोलवी मुहम्मद इलयास ने खुद कहा कि हज़रत मौलाना थानवी रः ने बहुत बड़ा काम किया है। बस मेरा दिल चाहता है कि तअ़लीम तो उन की हो और त़रीक़ए तब्लीग़ मेरा हो कि इस त़रह़ उन की तअ़लीम आ़म हो जाएगी । (मलफूज़ाते मौलाना मुहम्मद इलयास)

यह लोग अज़ राहे फरेब अहले सुन्नत व जमाअ़त को अपना हम अ़क़ीदा बनाने के लिए सिर्फ कलमा व नमाज़ का नाम लेते हैं और जब कोई सुन्नी धोखे से उन की जमाअ़त में शामिल हो कर उन की ज़ाहेरी अअ़माल का असर क़बूल कर लेता है तो फिर यह लोग आसानी के साथ उसे पक्का वहाबी देवबन्दी बना कर अल्लाह व रसूल की बारगाह का गुस्ताख़ बना लेते हैं।

मौदूदी जमाअ़त :यह गिरोह अपने आप को ''जमाअ़ते इस्लामी'' कहलाता है। यह भी वहाबियों देवबन्दियों की एक शाख़ है यअ़नी बुनयादी तौर पर दोनों एक हैं। उन के सारे कुफरी अ़क़ीदों से यह पूरे तौर इत्तेफाक़ रखते हैं । उस के इलावह इस जमाअ़त के बानी अबुल अअ़ला मौदूदी ने अपनी किताब ''परदह '' सफा 171 पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अ़रब का एक अनपढ़ चरवाहा लिखा है। (मआ़ज़ल्लाह) और तफ्हीमात जिल्द दोम सफा 281 में लिखा है कि ज़िना और क़ज़फ की शरई ह़द्द जारी करना बिला शब्हा जुल्म है। इस जुम्ला में मौदूदी ने अल्लाह तआ़ला को ज़ालिम क़रार दिया है। और लोगों को कुरआन से नफरत दिलाई है।

और मौदूदी ने तमाम अम्बियाए किराम खुसूसन ह़ज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम,हज़रत यूसुफ अ़लैहिस्सलाम,हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत दाउद अ़लैहिस्सलाम, और हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम, यहां तक कि सय्यदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की है।

और तमाम सहाबए किराम खास हज़रत अबू बकर सिद्दीक़,हज़रत उमर फारुक़,हज़रत उस्मान ग़नी, और हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम पर नुक्ता चीनी कर के उन की तौहीन की है। और राफिज़ियों को खुश करने

के लिए सहाबिए रसूल कातिबे वही़ हज़रत अमीर मुआ़विया रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ज़ात पर ऐसे इलज़ामात लगाए हैं। कि मुसलमान तो मुसलमान काफिर भी शरमा जाए। और उम्महातुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा व हज़रत ह़फ्सा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को ज़बान दराज़ क़रार दिया है उन की तफ्सीलात जानने के लिए किताब '' जमाअ़ते इस्लामी '' तस्नीफ हज़रत अ़ल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब कि़ब्ला और किताब '' दो भाई मौदूदी और खुमैनी '' मुलाहेज़ा फरमाएं।

सवाल : (4) वहाबियों देवबन्दियों के पीछे नमाज़ पढ़े तो किया हुक्म है ?

जवाब : (4) वहाबी देव बन्दी चूंकि कुफरी अ़क़ीदा रखते हैं जैसा कि जवाब नम्बर (1) में गुज़रा। इस लिए उन के पीछे नमाज़ हरगिज़ नहीं होती। जो शख़्स देवबन्दी इमाम के कुफरी अ़क़ीदा को जानते हुए किसी के दबाव या लेहाज़ में उस के पीछे उठक बैठक कर ली मगर नमाज़ की निय्यत नहीं की तो वह तौबा करे। और जो मुसलमान समझ कर उस के पीछे नमाज़ पढ़े ।वह तौबा व तज्दीदे ईमान के साथ तज्दीदे निकाह भी करे। और जो न जानकारी में उस की इक़्तेदा कर ले (यअ़नी उस के पीछे नमाज़ पढ़ ले) वह नमाज़ फिर से पढ़े और आइन्दा एहतियात़ से काम ले। (शरह़ अक़ाएद नस्फी सफा 160 में है।)

सवाल : (5) देवबन्दी की अज़ान व अक़ामत का क्या हुक्म है ?

जवाब : (5) बहारे शरीअ़त हिस्सा सोम सफा 31 में दुर्रे मुख़तार के हवाले से है कि फासिक़ अगरचे आ़लिम ही हो उस की अज़ान की इआ़दा किया जाए (यअ़नी फिर से अज़ान दी जाए) तो जब बेअ़मल की अज़ान दोबारा पढ़ने का हुक्म है तो देवबन्दी बद अ़क़ीदगी की अज़ान बदरजए औला दोबारा पढ़ी जाएगी । और अक़ामत कहने से भी उस को रोका जाएगा।

सवाल : (6) देवबन्दी अगर सफों के दरमयान (बीच) में खड़े हो जायें तो क्या हुक्म है ?

जवाब : (6) कुफरी अ़क़ीदा रखने वाले देवबन्दी की नमाज़ बातिल है तो जिस सफ के दरमयान में वह खड़ा हो शरीअत के नज़्दीक ह़क़ीक़त में इतनी जगह ख़ाली होती है जिस से क़तअ़ सफ होती है (यअ़नी सफ टूट जाती है) और सफ का टूटना ह़राम है। हदीस शरीफ में है कि – जो सफ को मिलाएगा अल्लाह उसे अपनी रह़मत से मिलाएगा और जो सफ क़त़अ़ करेगा अल्लाह उसे अपनी रह़मत से जुदा करेगा।

(निसाई जिल्द 1,सफा 131, अबूदाउद जिल्द 1 सफा 97)

सवाल : (7) क्या देव बन्दी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से तज्दीद ईमान व निकाह़ ज़रुरी है ?

जवाब : (7) जो शख़्स किसी के दबाव,लिहाज़ या चापलोसी में देव बन्दी के जनाज़ा की सफ में खड़ा हो जाए लेकिन नमाज़ की निय्यत न करे तो उस का तौबा करना ज़रुरी है। और जो मुसलमान समझ कर उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़े उस पर तज्दीदे ईमान व निकाह़ ज़रुरी है।

सवाल : (8) क्या तब्लीग़ी जमाअ़त को मस्जिद में ठहरने और त़क़रीर करने की इजाज़त दी जा सकती है ?

जवाब : (8) तब्लीग़ी जमाअ़त वाले कलमा व नमाज़ के नाम पर मुसलमानों को गुमराह करते हैं। और उन को अल्लाह व रसूल की बारगाह का गुस्ताख़ बनाते हैं। इस लिए कि उन का भी अ़क़ीदा वही है जो देवबन्दी का है जैसा कि जवाब (3) के तह़त गुज़रा,लिहाज़ा तब्लीग़ी जमाअ़त को मस्जिदों में ठहरे और तक़रीर करने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दी जा सकती है।

सवाल : (9) देव बन्दी से कुरबानी करवाना और उस का ज़बीहा खाना कैसा है ?

जवाब : (9) देव बन्दी चूंकि अपने कुफरी अ़क़ीदों के सबब मुसलमान नहीं जैसा कि जवाब नम्बर (1) में गुज़रा। इस लिए उस से कुरबानी करवाना हरगिज़ जाइज़ नहीं । अगर किसी ने करवाया तो उस की कुरबानी न हुई । और उसी सबब से उस का ज़बीह़ा (उस के हाथ का ज़बह किया हुआ) खाना ह़राम है।

(हिदाया अखरिय्यिन सफा 418)

सवाल : (10) देव बन्दी से निकाह़ पढ़वाना और उस के यहां शादी बियाह करना कैसा है ?

जवाब : (10) देव बन्दी से निकाह़ पढ़वाना हरगिज़ जाइज़ नहीं कि उस में एक त़रह़ से उस की तअ़ज़ीम है और बदमज़हब की तअ़ज़ीम सख़्त नाजाइज़ व हराम है। और कुफरी अ़क़ीदा रखने वाले देव बन्दी के यहां शादी बियाह करना हरगिज़ जाइज़ नहीं । अगर किया तो निकाह नहीं होगा ज़िना कारी होगी। फतावा आ़लमगीरी जिल्द अव्वल मतबूआ़ मिस्र सफा 263 में है – मुर्तद का निकाह (चाहे वह देवबन्दी वहाबी हो या राफज़ी वग़ैरह) मुरतदह , मुस्लिमा और काफिरा अस्लिया से जाईज़ नहीं । ऐसे ही मुर्तदा का निकाह़ किसी जाईज़ नहीं ऐसे ही मबसूत में है।

सवाल : (11) देवबन्दी को अच्छा समझने वाले और उस की हिमायत करने वाले के लिए किया हुक्म है ?

जवाब : (11) जो शख़्स देवबन्दियों को अच्छा समझे और उन की हिमायत करे उसे देवबन्दियों के कुफरी अक़ाएद से आगाह किया जाए। अगर वह इन कुफरियात पर मुत्तलअ़ (आगाह)हो कर हरमैन तय्यबैन के फतवा को हक़ माने और देवबन्दियों को मुसलमान न समझे तो वह अहले सुन्नत व जमाअ़त से है वरना वह भी उन्हीं के हुक्म में है। मुसलमान उस से दूर रहें ।

हदीस शरीफ में है कि बद मज़हब(देवबन्दी,वहाबी,क़ादियानी,राफज़ी,जमाअ़ती) से दूर रहो और उन को अपने क़रीब न आने दो। कहीं वह मुम्हें गुमराह न कर दें । कहीं वह मुम्हें फितने में डाल दें (मुस्लिम शरीफ जिल्द अव्वल सफा 10)

सवाल : (12) मस्जिद या मदरसा की तअ़मीर के लिए देवबन्दियों से चन्दा लेना या उन को चन्दा देना कैसा है ?

जवाब : (12) मस्जिद या मदरसा की तअ़मीर हो या जलसा जुलूस किसी काम के लिए देवबन्दियों से चन्दा लेना जाइज़ नहीं कि चन्दा लेने वाला चन्दा देने वाले का एह़सान मन्द होता है। लिहाज़ा जब सुन्नी किसी देवबन्दी से चन्दा लेगा तो उस को सलाम करेगा या उस के सलाम का जवाब देगा, उस के साथ उठे बैठेगा, उस के यहां खाएगा पिएगा और उस की शादी व ग़मी में शरीक होगा और यह सारी बातें बद मज़हबों के साथ नाजाइज़ व ह़राम है हदीस शरीफ में है कि – बद मज़हब अगर बीमार पड़ें तो उन की इयादत न करो,अगर मर जायें तो उन के ज़नाज़ा में शरीक न हो, उन से मुलाक़ात हो तो उन्हें सलाम न करो, उन के पास न बैठो,उन के साथ पानी न पिय्यो, उन के साथ खाना न खाओ, उन के साथ शादी बियाह न करो, उन के जनाज़ा की नमाज़ न पढ़ो और उन के साथ नमाज़ न पढ़ो। (यह हदीस शरीफ अबू दाउद इब्ने माजा,अ़क़ीली और इब्ने हब्बान की रिवायात का मजमूआ़ है।)

सवाल : (13) उलमाए किराम को गालियां देना,आ़ला ह़ज़रत को बुरा भला कहना और हदीस शरीफ को रद्दी की टोकरी वाली कह कर इन्कार करना कैसा है ?

जवाब : (13) उलमाए किराम ही से इस्लाम की रोशनी बाक़ी है इसी लिए खुदाए तआ़ला ने दुनिया व आखिरत में उन के लिए दरजात की बुलन्दी का वअ़दा फरमाया, जैसा कि कुरआन

मजीद में है '' अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ईमान वालों को और जिन लोगों को इल्म दिया गया है खास कर उन के दरजे को बुलन्द फरमाएगा। (पारह 28, रुकू 2) लिहाज़ा उलमाए किराम को आलिम होने के सबब गाली देना कुफ्र है बल्कि ह़क़ारत की नज़र से अ़लिमा बसैग़ए त़स्ग़ीर ''मोलविय्या'' कहना भी कुफ्र है।(शरह़ फिक़ह अक्बर 211)

और आ़ला ह़ज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिदवान चौदहवीं सदी के मुजद्दिदे अअ़ज़म हैं एक हज़ार से ज़ायद उन्हों ने किताबें लिखी हैं। मुवाफिक़ तो मुवाफिक़ '' अबुल अअ़ला मौदूदी '' और अबुल हसन नदवी '' वग़ैरह जैसे मुखालिफीन ने भी उन की तअ़रीफ व तह़सीन की है और शैख़ सय्यद अ़लवी मालिकी क़ाज़ियुल क़ज़ात मक्का मुकर्रमा ने फरमाया '' आला हज़रत की मुहब्बत सुन्नी होने की वहचान है और उन की अ़दावत व दुशमनी बद मज़हब होने की अ़लामत है (इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र सफा 148)

लिहाज़ा जो आला हज़रत को बुरा भला कहता है,वह यक़ीनन गुमराह व बद मज़हब है। मुसलमान उस से दूर रहें और उस को अपने क़रीब न आने दें। और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के अह़काम व इरशादात और कुरआन व इस्लाम की तशरीह़ात व तफसीलात के मजमूआ़ का नाम ह़दीस है कि उस के बग़ैर उन पर अ़मल मुम्किन ही नहीं । इसी लिए खुदाए तआ़ला ने अपनी अ़ताअ़त के साथ रसूल की फरमांबदारी का भी हुक्म फरमाया। कुरआन मजीद पारह 9 रुकूअ़,17 में है ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की फरमांबरदारी करो और रसूल से मुंह न फेरो। कुरआन मजीद में इस त़रह़ की बहुत सी आयतें हैं कि जिन में रसूल की फरमांबरदारी का हुक्म दिया गया है लिहाज़ा

ह़दीस का इन्कार करना,उसे रद्दी की टोकरी वाली क़रार देना रसूल की फरमांबरदारी से इन्कार करने और उन से मुंह फेरने के साथ हदीस शरीफ की तौहीन भी है। और यह कुफ्र है। जो शख़्स ऐसी बकवास करता है मुसलमानों पर लाज़िम है कि उस का सख़्त समाजी बाइकाट करें । उस के साथ खाना पीना,उठना,बैठना,और सलाम व कलाम सब बन्द कर दें। खुदाए तआ़ला का इरशाद है। पारह 7 रुकू 14

सवाल : (14) क्या कलमा पढ़ने वाला भी काफिर हो जाता है ? कुरआन मजीद की आयतों के ह़वाले से जवाब तह़रीर फरमाएं ?

जवाब : (14) हां कुफरी बात बकने के सबब कलमा पढ़ने वाला भी काफिर हो जाता है। इब्ने जरीर,तिब्रानी, अबुश्शैख़,और इब्ने मर्दुविय्या रईसुल मुफस्सिरीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत करते हैं कि कुछ लोग रसूल अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी का लफ्ज़ बोले । हुज़ूर ने उन से मुतालेबा फरमाया तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम ने कोई कलमा हुज़ूर की शान में बे अदबी का नहीं कहा है उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुईः कुरआन में पारह 10 रुकू 16 में अल्लाह तआ़ला ने खुल्लम खुल्ला फरमाया '' वह लोग मुसलमान थे और कलमा पढ़ने वाले थे लेकिन हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ी का लफ्ज़ बोलने के सबब काफिर हो गए,मुसलमान नहीं रह गए।

और इब्ने अबी शेबा,इब्नुल मुन्ज़िर,इब्ने अबी ह़ातिम,और अबुश्शैख हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के शागिर्दे खास हज़रत इमाम मुजाहिद रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स की गुमशुदा उंटनी के बारे में फरमाया क़ि फुलां जंगल में है। उस पर एक शख़्स ने कहा

उन को ग़ैब की क्या ख़बर ? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उस शख़्स को बुला कर दरयाफ्त फरमाया तो उस ने कहा हम तो ऐसे ही मज़ाक़ कर रहे थे उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई '' और अगर तुम उन से पूछो तो बेशक वह ज़रुर कहेंगे कि हम तो यूं ही हंसी खेल में थे। तुम फरमाओ क्या अल्लाह तआ़ला उस की आयतों और उस के रसूल से ठट्ठा करते थे ? बहाने न बनाओ अपने ईमान के बाद तुम काफिर हो गए । (पारह 10 रुकू 14)

इस आयत में भी वाज़ेह तौर पर फरमाया गया । क़द कफरतुम बअ़ द ईमानिकुम– यअ़नी वह ईमान वाले और कलमा पढ़ने वाले थे लेकिन कुफरी बात ज़बान से निकालने के सबब काफिर हो गए। अल्अ़याज़िबिल्लहि तआ़ला ।

सवाल : (15) तब्लीग़ी जमाअ़त वाले मुसल्मानों से कहते हैं कि फुलां मस्जिद में अल्लाह व रसूल का ज़िक्र होगा। आप तशरीफ लायें तो उन्हें क्या जवाब दिया जाए ?

जवाब : (15) उन्हें यह जवाब दिया जाए कि आप लोग अल्लाह व रसूल के नाम पर मुसलमानों को बुला कर उन्हें गुमराह व बद मज़हब बनाते हैं। इस लिए कि आप लोगों का अ़क़ीदा वही है जो कुफरी अ़क़ीदा रखने वाले देवबन्दियों का है और मुस्लिम शरीफ की हदीस शरीफ हैः उन्ज़ुरु अ़म्मन ताख़ुज़ू न दीनुकुम '' यअ़नी जिस से दीन की बातें हासिल करो उसे देख लो (मुस्लिम ब हवाला मिशकात शरीफ सफा 37) इस का साफ मतलब यह हुआ कि जो बद अ़क़ीदा है उस से अल्लाह व रसूल का ज़िकर भी न सुनो कि वह तुम्हें गुमराह व बद मज़हब बना देगा। इस लिए हम आप की मज्लिस में शरीक नहीं हो सकते ।

सवाल : (16) सुन्नी और वहाबी में क्या फर्क़ है ?

जवाब : (16) सुन्नी हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को खुदाए तआ़ला के बाद सब से बुज़रुग व बर तर मानते हैं और कुरआन मजीद की आयते करीमा '' व तुअ़ज़्ज़िरुहु व तुवक़्क़िरुहु '' के मुताबिक़ हर तरह से उन की तअ़ज़ीम व तकरीम करते हैं। और वहाबी देवबन्दी हुज़ूर की तअ़ज़ीम से इन्कार करते हैं बल्कि उन की शान में तौहीन करते हैं। उन के इल्म को शैतान व मलकलमौत के इल्म से कम बताते हैं जैसा कि उन की किताब बराहीने क़ातिआ़ सफा 51 पर है और हुज़ूर का इल्म बच्चों,पागलों और जानवरों जैसा ठहराते हैं । देखिए देवबन्दी की लिखी हुई किताब हिफ्जुल ईमान सफा 8 और हुजूर के बारे में अ़क़ीदा रखते हैं कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए। कहते हैं रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता। जिस का नाम मुहम्मद या अ़ली है वह किसी चीज़ का मुख़तार नहीं और नबी का दरजा बस ऐसा ही है जैसे किसी क़ौम के चौधरी का '' (मुलाहिज़ा हो तक़विय्यतुल ईमान सफा 28,40,42,44,)

सवाल : (17) टी,वी के लिए क्या हुक्म है ? कुछ लोग आमदनी बढ़ाने के लिए चाय वग़ैरह की दूकानों पर टी,वी लगाते हैं इस तऱह रोज़ी हासिल करना कैसा है और ऐसी दूकान पर चाय पीने के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : (17) टी,वी देखना और दिखाना ह़राम है कि वह छोटा सिनेमा है और हराम को ज़रियह़ बना कर जो रोज़ी हासिल की जाती है वह खबीस होती है। टी वी लगी हुई चाय की दूकान से मुसलमान नफरत करें ऐसी जगह पर चाय हरगिज़ न पियें । इस दूकान का बाईकाट करें। खुदाए तआ़ला का इरशाद है। ''वला तरकनू इलल्लज़ी न ज़ ल मू फ त मस्सकुमुन्नार,(पारह 12 रुकू 10)

सवाल : (18) जो लोग रखने के लिए दौलत कमाते हैं हुकूकुल्लाह,हुकूकुलइबाद,और क़ौम व मिल्लत को भूल बैठे हैं। उन के लिए अल्लाह व रसूल का किया हुक्म है ?

जवाब : (18) जो लोग रखने के लिए दौलत कमाते हैं उसे अल्लाह के रास्तें में खर्च नहीं करते उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। जैसा कि खुदाए तआ़ला का इरशाद है कि '' जो लोग सोना चांदी (यअ़नी माल) जमा करते हैं और अल्लाह के रास्ते में उसे खर्च नहीं करते हैं उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की खुशखबरी सुनादो जिस दिन जहन्नम की आग में वह तपाए जसयेंगे और उन से उन की पेशानियां और उन की करवटें व पीठें दाग़ी जायेंगी (और उन से कहा जाएगा) यह वह है जो तुम ने अपने लिए जमा किया था तो अब जमा करने का मज़ा चखो ''। (पारह 10 रुकू 11)

और खुदा तआ़ला का फरमान है '' वह लोग जो बखीली करते हैं उस के साथ जो अल्लाह ने उन्हें अपने फज़ल से दिया वह यह गुमान हरगिज़ न करें यह उन के लिए बेहतर है अल्कि यह उन के लिए बुरा है। उस चीज़ का क़्यामत के दिन उन के गले में (सांप बना कर) तौक़ डाला जाएगा जिस के साथ उन्हों ने बख़ीली की।(पारह 2 रुकू 9)

जो लोग अल्लाह के हुकूक़ को भूल बैठे हैं वह तरह़ तरह़ के शदीद अ़ज़ाब में मुब्तला किए जायेंगे। और बन्दों के हुकूक़ के बारे में तो बहुत सख़्त वईदें है। खुदाए तआ़ला उन्हें मुआ़फ नहीं फरमाएगा जब तक बन्दा न मुआफ करे। अगर वह मुआ़फ नहीं करेगा तो हदीस शरीफ के मुताबिक़ क़्यामत के दिन तीन पैसे की मालियत के बदले सात सौ नमाज़ बा जमाअ़त का सवाब देना पड़ेगा। अगर नमाज़ों का सवाब नहीं होगा तो दिगर नेकियों का सवाब देना पड़ेगा और दूसरी नेकियां भी उस के पास नहीं होगी तो हक़दार की बुराईयां उस पर लाद

दी जायेंगी और उसे जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। अल्अ़याज़िबिल्लाहि तआ़ला।

और जो लोग क़ौम व मिल्लत को भूल बैठे हैं वह दुनिया व आखिरत में इज़्ज़त नहीं पा सकते अल्कि दोनों जहां में ऐसे ज़लील व रुसवा होंगे।

सवाल : (19) मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे नबवी वग़ैरह में सउदी इमाम के पीछे हाजियों को नमाज़ पढ़ना कैसा है ?

जवाब : (19) मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे नबवी वग़ैरह के नजदी सउदी इमाम जो कुफरी अ़क़ीदा रखते हैं और हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बारगाह के गुस्ताख़ व बे अदब हैं उन के पीछे हाजी और ग़ैर हाजी किसी को नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। जैसा कि शरह़ अक़ायद नस्फी का ह़वाला जवाब नम्बर (4) में गुज़रा है।

सवाल :(20) झूठ,ग़ीबत,चुग़ली,गाली गलूज़,बद अ़हदी,बेईमानी,ह़सद,बुग्ज़,रयाकारी

ज़िना कारी,और सूद खोरी जैसे बुरे अफआल में जो लोग मुब्तला हों उन के लिए क्या हुक्म है ?

जवाब : (20) झूठ हराम है हदीस शरीफ में आया है '' झूठ बोलना फिस्क़ व फुजूर है और फिस्क़ व फुजूर दोज़ख में ले जाता है। (मुस्लिम शरीफ,जिल्द 2 सफा 326) और ग़ीबत सख़्त नाजाइज़ ह़राम है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''ग़ीबत ज़िना से बदतर है किसी ने अर्ज़ ने किया या रसूलल्लाह ! ग़ीबत ज़िना से क्यों बदतर है ? फरमाया ज़िना करता है फिर (सह़ी) तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे मुआफ फरमादेता है लेकिन ग़ीबत करने वाले को अल्लाह तआ़ला मुआ़फ नहीं फरमाता जब तक कि उस को वह शख़्स न मुआ़फ कर दे जिस की ग़ीबत की गई हो। (मुस्लिम शरीफ,जिल्द 2 सफा 415) और चुग़ली भी ह़राम है बुखारी व

मुस्लिम की ह़दीस शरीफ है ''चुगुल खोर जन्नत में नहीं जायेगा (बुखारी शरीफ,जिल्द 2 सफा 895) और गाली गुलूज भी ह़राम है। हदीस शरीफ में है '' मुसलमान को गाली देना फिस्क़ है (बुखारी जिल्द 2 सफा 893 मुस्लिम शरीफ,जिल्द 2 सफा 411) और यह़या बिन खालिद ने कहा ''यअ़नी जब तू किसी को देखे फहश बकने वाला बे ह़या है तो जान ले कि उस की असल में ख़ता है (हकाहुल मुनावी फित्तसीर) और बद अ़हदी भी ह़राम है खुदाए तआ़ला का इरशाद है ''ऐ ईमान वालो ! अपने अ़हद पूरे करो (पारह 6 सूरए मायदा,रुकू 1) और बे ईमानी करना हक़्कुल अ़ब्द में गिरिफ्तार होना है जो बहुत सख़्त है कि खदाए तआ़ला उसे मुआ़फ नहीं फरमाएगा जब तक कि वह बन्दा न मुआ़फ कर दे। और ह़सद भी सख़्त नाजाइज़ व ह़राम है जो नेकियों को इस तरह़ खाजाता है जैसे आग लकड़ी को । जैसा कि अबू दाउद शरीफ की हदीस शरीफ है ।

और बुग्ज़ के मु त अल्लिक़ हदीस शरीफ में है '' बुग्ज़ व अ़दावत दीन को मूंडने वाली है (मिश्कात,सफा428)

और रया कारी अ़मल का सवाब बरबाद कर देती है इस लिए कि वह शिर्क अस्ग़र है जैसा कि हदीस शरीफ में है '' दिखावे के लिए काम करना शिर्क अस्ग़र है (मिश्कात शरीफ सफा 456) और ज़िना सख़्त नाजाइज़ व ह़राम है कि बादशाहे इस्लाम को ज़िना करने वाले पर हद जारी करने का हुक्म है। और सूद के मुतअल्लिक़ हदीस शरीफ में है '' सूद का गुनाह ऐसे सत्तर गुनाहों के बराबर है जिन में सब से कम दरजा का गुनाह यह है कि मर्द अपनी मां से ज़िना करे। (इब्ने माजा सफा 164) सूद लेने को ह़लाल जानना कुफरे सरीह़ है और ह़राम जान कर एक दिरहम सूद खाना अपनी मां से 36 बार ज़िना करने के बराबर है। (फतावा रज़्विय्या जिल्द 6 सफा 75)

जो लोग मज़कूरा बाला बुराईयों में मुब्तला हैं वह सख़्त गुनहगार मुस्तहक़ अज़ाबे नार हैं। अल्लाह वाहिदे क़हहार के अज़ाब से डरें,तौबा व इस्तेग़फार करें,जिस गुनाह का तअ़ल्लुक़ किसी बन्दे से है इस का तदारुक करें और फिर कभी इन गुनाहों के क़रीब हरगिज़ न जायें। वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु बिस्सवाब

नोट : यह सब फतवे मुफ्ती जलालुद्दीन अहमदुलअम्जदी रहमतुल्लाह अ़लैह दारुल इफ्ता अम्जिदिया अरशदुल उलूम ओझा गंज, ज़िला बस्ती के हैं।

सवाल (21)क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि ज़ैद मीरा अ़ली दातार रहमतुल्लाह अ़लैह की बारगाह से कुछ भी ईंट या चिराग़ या कोई और चीज़ ले कर आया है। और उस की मज़ार बनाया और उस मज़ार पर लोग हाज़री देते हैं फातहा पढ़ते हैं, ईसाल करते हैं,दुआ मांगते हैं,उन्हें मना किया जाये तो कहते हैं। कि अगर हक़ नहीं तो फैज़ क्यों मिलता है तो उस का जवाब क्या है,और जो हाज़री देते हैं तो हाज़री देना कैसा है,और जिस ने ऐसा अ़मल किया यअ़नी मज़ार बनाया तो उस के बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है ? तसल्ली बख़्श जवाब दें।

जवाब (21) अलजवाब बिऔनिल मलिकिल मुअ़तिल वहहवाब अल्लाहुम्मा हिदासतिल हक्क़ वस्सवाबः

जिस क़ब्र में कोई वली दफन है वही मज़ार है। किसी बुज़रुग के यहां से कोई भी चीज़ ला कर ज़मीन में गाड़ दें और उस का नाम मज़ार रख दें, यह नाजाईज़ है । और फर्ज़ी क़ब्र पर हाज़री, नज़्र व नियाज़,और वहां दुआ़ मांगना ना जाईज़ है और मज़हबे अहले सुन्नत को बदनाम करना है, उस को मिटा देना चाहिए और बनाने वाले और वहां जाने वालों पर तौबा लाज़िम है और यह वसवसा शैतानी है कि अगर हक़ नहीं

तो फैज़ क्यों मिलता है यह बात तो बुत का पुजारी भी कह सकता है तो क्या उस की बात मान ली जायेगी,जिस की हाजत पूरी ही होने वाली थी हो गई वहां नहीं जाता तो भी हो जाती, अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है ज़य्य न लहुमुश्शैतानु अअ़मालहुम – शैतान बुरे कामों को लोगों की नज़र में अच्छा कर के पेश करता है। वलियल्लाह को घर में याद करो उन के वसीले से दुआ करो,उन से मदद लो हाजत पूरी होगी। वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु बिस्सवाब ।

सवाल (22) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि साईं बाबा के नाम की और उस की मूरती की मन्दिर है। अपने को मुसलमान कहलवाने वाले इस मन्दिर पर हाज़री दिए और फातेहा पढ़ी, और दुआ़ मांगी, तो शरीअ़त का क्या हुक्म है। और अगर साईं बाबा के लिए दुआ़ की तो क्या हुक्म है, और जो मुसलमान शामिल रहे और आमीन कही तो शरीअ़त का क्या हुक्म है इन सब सवालों का तफ्सीली जवाब क्या है ?

जवाब (22)साईं मुशरिक था, मन्दिर में जाकर मूरती के पास हाज़िर होना वहां दुआ़ मांगना,फातहा पढ़ना,मूरती की बिला शक व शुब्हा तअ़ज़ीम करना खुला हुआ कुफ्र है। मुशरिक की मग़्फिरत की दुआ़ करना और वह भी मरने के बाद कुफ्र है,(लाहौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम) कोई ईमान वाला मन्दिर में ही नहीं जा सकता उन सब पर तौबा और फिर से मुसलमान होना फर्ज़ है , और जो बीवी वाला हो उस पर नए मेहर के साथ दोबारा उसी बीवी के साथ निकाह करना भी फर्ज़ है वरना हमबिस्तरी खालिस ज़िना कारी होगी और औलाद वल्दुज़्ज़िना (हरामी) होगी। अल्लाह तआ़ला हिदायत दे (आमीन)

सवाल (23)क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि ज़ैद एक सुन्नी मस्जिद में इमाम है, ज़ैद को तअ़ज़ियादारों

से या फर्ज़ी क़ब्रों पर जाने वालों से कैसे तअ़ल्लुक़ात रखने चाहिए ?

जवाब (23) उन से तअ़ल्लुक़ रखने में उन के हिदायत की उम्मीद हो तो तअ़ल्लुक़ रखना जाईज़ है वरना उन से दूरी बेहतर है।

सवाल (24) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि चन्द लोग मुसलमान हुजूर ताजुल औलिया हज़रत बाबा ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अ़लैह का जनम दिन जुलूस की शकल में और हज़रत का फोटू जुलूस में उठाए हुए चलना और केक काटना,इस तरह किसी बुज़रुग का यौमे पैदाईश मनाना कैसा है ?

जवाब (24) यौमे विलादत मनाना जाइज़ है,फोटू ह़राम है,केक काटना अंग्रेज़ों का त़रीक़ा है,उस से बचें, किसी भी पाक चीज़ पर फातेह़ा ईसाले सवाब जाइज़ है।

सवाल (25) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि सन्दल जो बुज़रुगों का निकालते हैं,ढोल बाजे के साथ उस के बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है ?

जवाब (25) ढोल बाजे नाजाइज़ हैं।

हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती अन्सार ख़ान क़ादरी रज़वी(छिन्दवाड़ा) मध्य प्रदेश अलजामियतुल ग़ौसिया शहर छिन्दवाड़ा 9425896733